

## Chapter 13

Question: Is it right that fame comes after death?

प्रश्न: क्या यह सही है कि मनुष्य के मरने के पश्चात ही उसका यश फैलता है?

Krishnamurti: Do you think that the villager who dies will have fame afterwards?

कृष्णमूर्ति : क्या आपको लगता है कि एक ग्रामीण की मृत्यु के उपरांत उसका यश फैलता है?

Comment+: A great man, after he dies, becomes famous and is honoured.

श्रोता: कोई महान व्यक्ति जब मर जाता है तो उसकी ख्याति चारों ओर फैलती है और उसका सम्मान होता है।

Krishnamurti: What is a great man? Let us find out the truth of that question. Is he one who seeks fame? Is he one who would give himself tremendous importance? Is he one who identifies himself with a country and becomes a leader? If he does this, he has fame while he is living. That is what we all want; we all want the same thing, to be great people. You want to lead the procession, you want to be the governor, you want to be the great ideal, the great person who is going to reform India. Since you want that, maybe you will lead the procession. But is that greatness? Does greatness consist in being publicized, in having your name appear in the papers, having authority over people, making people obey because you have a strong will or personality or some kink in the mind? Surely, greatness is something totally different.

कृष्णमूर्ति : महान मनुष्य किसे कहते हैं? आइए इस सवाल के यथार्थ का पता लगाएं। क्या वह ऐसा मनुष्य होता है जो प्रसिद्धि पाना चाहता है? क्या वह ऐसा मनुष्य होता है जो अपने आपको अत्यधिक गौरव देता है? क्या वह कोई ऐसा मनुष्य होता है जो अपने देश से अपनी पहचान जोड़ लेता है और नेता बन जाता है? यदि वह ऐसा करता है तो जीवित रहते हुए ही उसकी ख्याति चारों ओर फैल चुकी होती है। हम सभी तो यही चाहते हैं, हम सब ऐसे ही महापुरुष बनना चाहते हैं। आप चाहते हैं कि जुलूस का नेतृत्व आप ही करें, आप गवर्नर बनना चाहते हैं, आप एक महान आदर्श-पुरुष बनना चाहते हैं, एक ऐसे महापुरुष बनना चाहते हैं जो भारत का पुर्ननिर्माण करे। चूंकि आप ऐसा करना चाहते हैं अतः संभव है कि आप जुलूस का नेतृत्व अपने हाथों में ले लें। परंतु क्या यही महानता है? क्या आपका प्रचार होना, अखबारों में आपका नाम प्रकाशित होना, लोगों पर आपका वर्चस्व होना, चूंकि आपमें इच्छाशक्ति की दृढ़ता है या आपका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली है, अथवा आपके ख्यालों में कोई अद्भुत सनक है, क्या इससे आप महान हो जाते हैं? महानता निश्चित ही इस सबसे भिन्न बात होती है।

Greatness is anonymity, to be anonymous is the greatest thing. Great cathedrals, great sculpture, all the great things of life, must be anonymous. Like truth, they do not belong to any particular person. Truth does not belong to you or to me, it is totally impersonal and anonymous. If you say you have got truth, then you are not

अनाम रहना महानता है, अज्ञातप्राय रहना महानतम चीज़ है। महान पूजागृह, महान शिल्प, जीवन की समस्त श्रेष्ठ चीज़ें अनाम रहनी चाहिए। सत्य की तरह वे किसी खास व्यक्ति की नहीं हुआ करतीं। सत्य आपका अथवा मेरा नहीं होता, यह पूर्णतः निर्वैयक्तिक और अज्ञात होता है। यदि आप कहते हैं कि आपने सत्य पा लिया है तो आप अनाम नहीं रह जाते, आप अपने आप को सत्य से भी अधिक महत्त्व प्रदान कर

## Chapter 13

anonymous, you are making yourself more important than truth. But an anonymous person may never be great because he does not want to be great—great in the sense of the world, or even inwardly, because he is nobody. He has no followers, he has no shrine, he does not puff himself up. But most of us, unfortunately, like to puff ourselves up, we want to be great, we want to be known, we want to have success. Success leads to fame, but that is an empty thing, is it not? It is like ashes. Every politician is known, for it is his business to be known; therefore, he is not truly great. Greatness is to be unknown, inwardly and outwardly to be as nothing, and that requires great penetration, great understanding, great affection.

Question: If we respect anyone, there is fear. Then why do we respect?

Krishnamurti: It is fairly simple. If you respect out of fear, you want something from that person, don't you? Therefore you do not respect him at all. All that you want is to get something out of him. So, you bow down very low, touch his feet, and put a garland round his neck. That is not respect; respect is something entirely different. To respect another requires affection, not fear. When you respect somebody from whom you are hoping to get something, then you will despise people who are below you; you will have contempt for others. A man who has contempt for another can never be free from fear, can he?

Is it not possible to have affection in oneself which naturally

रहे होते हैं। परंतु जो वस्तुतः अनाम है वह हो सकता है कभी महान न माना जाए, क्योंकि उसे महान होने की इच्छा तक नहीं होती—लौकिक अर्थों में और आंतरिक तल पर भी, क्योंकि वह अकिंचन होता है, वह कुछ होता ही नहीं। न तो उसके अनुयायी होते हैं और न स्मारक होता है, वह अपना बखान नहीं करता। परंतु दुर्भाग्यवश हममें से अधिकतर लोग अपनी प्रशंसा स्वयं ही करते हैं, हम महान होना चाहते हैं, हम चाहते हैं कि सब लोग हमें जानें, हम सफल होना चाहते हैं। सफलता से प्रसिद्धि तो मिल सकती है परंतु प्रसिद्धि एक थोथी चीज़ होती है, होती है न? यह राख की तरह होती है। हर राजनीतिज्ञ को लोग अच्छी तरह जानने लगते हैं, क्योंकि उसका धंधा ही यह होता है कि लोग उसे जानें, अतः वह वास्तव में महान नहीं होता। महानता है अज्ञात हो रहना, भीतर बाहर से कुछ-न हो जाना, और उसके लिए अत्यंत प्रखरता, गहन समझ तथा गहरी प्रीति का होना ज़रूरी है।

प्रश्न : किसी का आदर करने में भय छिपा होता है। फिर हम किसी का आदर क्यों करते हैं?

कृष्णमूर्ति : यह समझना तो आसान है। यदि आप भय के कारण किसी का आदर करते हैं तो आप अवश्य ही उस व्यक्ति से कुछ चाह रहे होते हैं, है न? इसलिए वस्तुतः आप उसका आदर तो बिलकुल नहीं करते। आप केवल उससे कुछ पाना भर चाहते हैं। इसलिए आप बहुत झुक जाते हैं, उसके चरण स्पर्श करते हैं और उसके गले में पुष्पहार पहनाते हैं। वह आदर करना नहीं होता, आदर करना तो इससे नितान्त भिन्न बात होती है। किसी का आदर करने का अर्थ है उससे स्नेह-संबंध होना, न कि उसका डर। जब आप एक ऐसे व्यक्ति का आदर करते हैं जिससे आपको कुछ प्राप्त होने की आशा होती है तो आप अपने अधीनस्थ लोगों की उपेक्षा भी अवश्य करेंगे, दूसरे लोगों को तुच्छ समझेंगे। और जिस मनुष्य के मन में दूसरों के प्रति उपेक्षा की भावना हो वह भय से मुक्त कैसे हो सकता है, क्या ऐसा संभव है?

क्या यह संभव नहीं है कि दूसरों से हमें क्या प्राप्त हो सकता है इसका विचार किए बिना

## Chapter 13

expresses itself as respect for every person, regardless of whether one gets something or not? Watch the way you treat the coolie, the labourer, the servant of your hostel, and the way you treat your housemaster or the principal or a member of the Foundation—the scale going up and up—and you will see the manner of your behaviour. You do not get up when the coolie comes in, but when your teacher comes in, you jump up, and the teacher demands that you jump up because he thinks that you must show respect to him. But he does not insist that you should treat the servant with equal respect and talk to him gently and kindly.

हमारे भीतर ऐसी प्रीति हो, जो हर व्यक्ति के प्रति आदर के रूप में प्रकट हो सके? इस बात पर ध्यान दीजिए कि आप किसी कुली से, किसी मजदूर से, अपने छात्रावास के किसी कर्मचारी से किस ढंग से व्यवहार करते हैं और यह भी देखिए कि आपके छात्रावास के अधीक्षक से, प्राचार्य से या फाउंडेशन के सदस्य से आपका व्यवहार किस प्रकार का हुआ करता है—जैसे-जैसे पैमाना ऊपर चढ़ता है आपका व्यवहार भी तदनुसूचक बदलता जाता है। जब कुली आपके कमरे में आता है तो आप उठकर खड़े तक नहीं होते हैं परंतु जैसे ही आपके शिक्षक का आगमन होता है आप उछलकर खड़े हो जाते हैं और शिक्षक भी आपसे यही उम्मीद करता है कि आप तत्काल उसके सम्मान में उठ खड़े हों, क्योंकि वह भी सोचता है कि आपको उसके प्रति सम्मान प्रकट करना चाहिए। परंतु वह आपसे यह आग्रह नहीं करता कि आप छात्रावास के कर्मचारी से भी इतने ही आदरपूर्वक पेश आएँ और उससे भी नम्रतापूर्वक और मृदु स्वरों में बात करें।

Is it not important to know all this while you are young so that you do not become slaves to authority, so that you have real affection and respect for people, which you show to the servant as well as to the man whom you think to be more important? But as long as there is fear and no affection, you are bound to have contempt for the one, and so-called respect for the other.

क्या अभी, जब आप बच्चे ही हैं तब ही यह जान लेना महत्त्वपूर्ण नहीं है कि आप अधिकारप्राप्त लोगों के गुलाम न बनें, ताकि आपके मन में सभी लोगों के प्रति सच्चा स्नेह और आदर हो, जिसे आप किसी कर्मचारी के प्रति, और जिसे आप अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व देते हैं उसके प्रति भी, समान रूप से प्रकट कर सकें? परंतु जब तक आपमें भय है और स्नेह का अभाव है तब तक आप किसी से तो घृणा करेंगे और किसी अन्य का तथाकथित रूप से आदर करेंगे।

Question: Why does the elder brother beat the younger sister, and the younger sister beat the younger brother?

प्रश्न : बड़ा भाई छोटी बहन को और छोटी बहन अपने से छोटे भाई को क्यों मारते हैं?

Krishnamurti: That is a very good question. Have you ever watched a chicken and seen how the more powerful pecks the weaker, and the weaker chicken pecks the still weaker one? But you do not watch anything, though there is life all about you. You do not look, you do

कृष्णमूर्ति : यह एक बहुत अच्छा प्रश्न है। क्या आपने कभी मुर्गी के चूड़ों को देखा है कि कैसे उनमें से अधिक ताकतवर, कमजोर को चोंच मारता है और कमजोर चूड़ा और कमजोर को? परंतु आप तो कुछ देखते ही नहीं, जबकि आपके चारों ओर जीवन ही जीवन फैला हुआ है। आप देखते ही नहीं, आप अवलोकन ही

## Chapter 13

not observe—neither your teachers nor yourselves. That is how life is. Among the animals, the stronger destroys the weaker. And that is what we also do in human society. The strong man pushes out his chest and beats everybody, and the weaker one gets angry with the still weaker.

You ask why we do this. For the very simple reason that we want to do it. If we are beaten by a big man, we want to take it out on the little man. You know the desire to hurt is very strong in us. We want to hurt people. There is a pleasure in hurting people, in saying cruel things about people, ugly things, belittling them. We never speak of people with kindness. We never speak of their goodness but always talk with a sneer. That is what has to be understood—not why the elder sister beats the younger sister, and so on. The elder sister is probably beaten by the father or mother, therefore she has to take it out on somebody. She beats the younger and the younger takes it out on the little ones.

To understand cruelty, to understand animosity and not create it is very difficult for most people. We never think of all these things. In our schools these acts of cruelty are never pointed out because the teacher does not see them himself. He has his own problems, he has to get through the class and push the students through some examinations. Please do watch all the things that are taking place about you—how the chickens fight each other, how the strong bulldog dominates everything else. You will find that the same spirit of

नहीं करते—न तो आपके शिक्षक, और न आप! जीवन इस तरह का है। जानवरों में, अधिक ताकतवर कमजोर को मिटा डालता है। और ऐसा ही हम अपने मनुष्यों के समाज में भी करते हैं। शक्तिशाली सीना तानकर खड़ा हो जाता है और हर किसी को मारता है, और कमजोर, अपने से निर्बल पर अपना गुस्सा निकालता है।

आप पूछते हैं कि हम ऐसा क्यों करते हैं। इसका सीधा सा कारण यही है कि हम ऐसा करना चाहते हैं। यदि किसी बड़े व्यक्ति ने हमारी पिटाई की हो तो हम अपने से छोटे किसी व्यक्ति से इसका बदला चुका लेते हैं। आप जानते हैं कि दूसरों को पीड़ा पहुंचाने की प्रवृत्ति हममें बहुत प्रबल होती है। हम लोगों को चोट पहुंचाना चाहते हैं। लोगों को चोट पहुंचाने में, उन्हें कठोर शब्द कहने में, उन्हें अपशब्द कहने में, उनकी बेइज्जती करने में हमें मजा आता है। हम दूसरों के बारे में कभी सौजन्यतापूर्वक बात नहीं करते। हम उनकी अच्छाइयों की चर्चा नहीं करते, बल्कि उनका मखौल उड़ाते हैं। बड़ी बहन, छोटी बहन को क्यों मारती है आदि बातों की बजाय इस चीज़ को समझा जाना बहुत महत्त्वपूर्ण है। हो सकता है बड़ी बहन को माता अथवा पिता ने मारा हो, इसलिए इसका बदला वह किसी और से लेना चाह रही हो। वह अपने से छोटे को पीटती है और छोटा और भी छोटे बच्चों को पीटकर अपना गुस्सा निकालता है।

क्रूरता को, शत्रुता को समझना और यह सब उत्पन्न न होने देना अधिकांश लोगों के लिए आसान नहीं होता। हम इन सब बातों पर कभी सोचते तक नहीं। हमारे विद्यालयों में क्रूरता के इन कृत्यों की ओर हमारा ध्यान कभी नहीं खींचा जाता, क्योंकि शिक्षक इन बातों को स्वयं ही नहीं देख पाता है। उसकी अपनी समस्याएं होती हैं, उसे कक्षा में पढ़ाना होता है, और छात्रों को परीक्षाओं के लिए तैयार कराना होता है। कृपया अपने आस-पास हो रही विभिन्न घटनाओं को ध्यानपूर्वक देखिए—मुर्गी के चूड़े आपस में कैसे झगड़ते हैं, एक ताकतवर बुलडॉग कैसे हर किसी पर हावी होता है। आप पाएंगे कि दूसरों पर वर्चस्व स्थापित करने की, क्रोध की, घृणा और शत्रुता की प्रवृत्ति हम सभी में

## Chapter 13

domination, anger, hatred, and animosity is in each one of us. To dispel this, we have only to be aware of it, and not to consider it as wrong or right.

Question: What is freedom?

Krishnamurti: I wonder if you really want to know what freedom is! Do any of us know what is freedom? All that we know is that we are made to do things, we are compelled by circumstances or through our own fears to do things, and we want to break away from them. The breaking away from restraint, from compulsion, from fear, or anything else is what we call freedom. Please listen.

The breaking away from restraint, the breaking away from a hindrance, the breaking away from some form of compulsion, is not freedom. Freedom is something in itself, not away from something. Please understand this. The man put in a prison for some cause wants to break away and be free. He only thinks in terms of breaking away. If I am envious, I feel that if I can only break away from envy, I will be free. But the overcoming of envy is not freedom; the breaking away, the suppressing, is merely another expression of the same thing. The love of something for itself is freedom. There is freedom when you paint because you love to paint, not because it gives you fame or gives you a position. In the school, when you love to paint, that very love is freedom, and that needs an astonishing understanding of all the ways of the mind. Surely it is very simple to do something for itself and not for what it brings you- either as a punishment or as a reward. Just to love the thing for

हुआ करती है। इसे दूर करने के लिए इसके प्रति सजग रहना ही पर्याप्त होता है, इसे उचित या अनुचित कहने से हम इसे दूर नहीं कर सकते।

प्रश्न : स्वतंत्रता क्या है?

कृष्णमूर्ति : मैं नहीं कह सकता कि स्वतंत्रता क्या है इसे जानने में आपकी वस्तुतः रुचि है भी या नहीं। क्या हममें से कोई भी यह जानता है कि स्वतंत्रता क्या है? हमें तो बस इतना ही पता है कि हमें कुछ न कुछ करना पड़ता है, परिस्थितियों के दबाव में या अपने ही भयों से हम कुछ करने के लिए विवश होते हैं और हम चाहते हैं कि हमें इन सबसे छुटकारा मिल जाए। नियंत्रण से, बाध्यता से, भय से, या ऐसी ही किसी बात से पलायन को हम स्वतंत्रता कहते हैं। कृपया ध्यान से सुनें।

पाबंदियों से, बाधाओं से, बाध्यताओं से छुटकारा पा लेना स्वतंत्रता नहीं होता। स्वतंत्रता तो बस स्वतंत्रता होती है, किसी स्थिति से पलायन को स्वतंत्रता नहीं कह सकते। कृपया इसे समझें। किसी कारण से जेल में बंद व्यक्ति यही चाहता है कि किसी तरह से वह भाग पाए और स्वतंत्र हो जाए। वह वहां से भागने का ही विचार करता है। यदि मैं ईर्ष्यालु हूं तो मुझमें यही भावना उठती है कि यदि मैं ईर्ष्या करना छोड़ पाऊं तो मैं स्वतंत्र हो जाऊंगा। परंतु ईर्ष्या पर विजय पाना स्वतंत्रता नहीं है, ईर्ष्या से पलायन, ईर्ष्या का दमन वस्तुतः उसी भाव की एक और अभिव्यक्ति भर होती है। किसी वस्तु या कार्य से बिना किसी अन्य प्रयोजन के किया जानेवाला प्रेम स्वतंत्रता है। जब आप इसलिए चित्रकारी करते हैं क्योंकि आपको चित्रकारी करने से लगाव है, और इसलिए नहीं कि इससे आपको ख्याति या पद प्राप्त होगा, तो यह स्वतंत्रता है। यदि आपको इस स्कूल में चित्रकारी करना अच्छा लगता है--जब आपको चित्रकारी करने से लगाव होता है तो वह लगाव ही स्वतंत्रता है, और इसके लिए यह आवश्यक है कि मन के सारे तौर-तरीकों के बारे में आपकी समझ अद्भुत रूप से गहरी हो। किसी भी कार्य को उसकी अपनी खातिर ही करना अवश्य ही बहुत सरल है, नाकि इसलिए कि उससे क्या प्राप्त

## Chapter 13

itself is the beginning of freedom.

Do you spend ten minutes of your class period talking of all these things? Or do you plunge immediately into geography, mathematics, English, and all the rest of it? What happens? Why don't you do this for ten minutes every day, instead of wasting your time on some stupid stuff which does not really interest you but which has to be done? Why don't you spend some time with your teacher in class talking about these matters? This would help you in your life—though it might not help you to become great or successful or famous. If you talk about these matters every day for ten minutes, intelligently, fearlessly, then it will help you all through life because it will make you think and not merely repeat things like parrots. So, please ask your teachers to talk to you about these matters. Then you will find both the educator and yourself becoming more intelligent.

Question: Can nature get rid of nature's dependence? If dependence is equivalent to fear, can we ever get rid of nature's dependence?

Krishnamurti: When we are very young, as babies, we are dependent; we depend on the mother for milk; we need to be protected, to be watched, to be cared for. That is inevitable for the child and for every bird, every animal. All the puppies in this place are guarded by the mother. That is a natural thing. But as we grow, if we depend on somebody for happiness, for

होगा, दंड या पुरस्कार। किसी भी कार्य को करने मात्र से ही प्रेम होना स्वतंत्रता का आरंभ है।

क्या आप अपनी कक्षा में नियत अध्ययन अवधि में दस मिनट के लिए समय निकालकर इन सब बातों पर चर्चा करते हैं। या पीरियड शुरू होते ही भूगोल, गणित, अंग्रेजी और दूसरे विषयों की पढ़ाई करने लगते हैं? क्या होता है कक्षा में? कुछ दूसरे निरर्थक कार्यों में जो आपको ज़रा भी अच्छे नहीं लगते, पर चूंकि उन्हें किया जाना ज़रूरी होता है, इसलिए आप उन्हें करते हैं—उन चीज़ों में समय व्यर्थ करने की अपेक्षा यह अधिक उचित होगा कि आप इसके लिए दस मिनट दें, आप ऐसा क्यों नहीं करते? अपनी कक्षा में अध्यापक से इन बातों पर चर्चा करने के लिए आप थोड़ा समय क्यों नहीं निकालते? जीवन में आगे जाकर यह काम आएगा, हालांकि यह ज़रूरी नहीं है कि इससे आपको महान बनने में, ख्याति प्राप्त करने में या सफल होने में सहायता मिले ही। यदि आप प्रतिदिन दस मिनट विवेकपूर्ण, निर्भयता से इन विषयों पर बातचीत करते हैं तो इससे आपको सारे जीवन भर मदद मिलेगी क्योंकि इससे आप चिंतन करना सीखेंगे और रट्टू तोते की तरह केवल दोहराते न रहेंगे। इसलिए, अपने शिक्षकों से अवश्य कहें कि इन बातों पर आपसे वे चर्चा करें। तब आप देखेंगे कि आपको शिक्षा देनेवाले और आप स्वयं भी अधिक मेधावी होने लगे हैं।

प्रश्न : क्या प्रकृति अपनी स्व-आश्रितता से मुक्त हो सकती है? यदि आश्रित होने का तात्पर्य भयग्रस्त होना है तो क्या कभी यह संभव होगा कि प्रकृति पर हमारी निर्भरता से हम मुक्त हो पाएं?

कृष्णमूर्ति : जब हम बहुत छोटे होते हैं, जब हम शिशु होते हैं तो हम किसी पर आश्रित होते हैं, दूध के लिए हम अपनी माता पर आश्रित होते हैं, हमें सुरक्षा की आवश्यकता होती है, यह ज़रूरी होता है कि कोई हमारी देखभाल करे, हमारा ध्यान रखे। एक बच्चे के लिए, प्रत्येक पक्षी के लिए, हर पशु के लिए यह अपरिहार्यतः आवश्यक होता है। इस स्थान पर आपने कुत्तों के बच्चों को देखा होगा, उन सबकी रक्षा उनकी माता करती है। यह एक प्राकृतिक व्यवस्था है।

## Chapter 13

---

comfort, for guidance, for security, then out of that dependence comes fear. Dependence makes us dull, insensitive, fearful. We do depend on the railway, on the post office, but that is not dependence; that is a function in which both of us are partaking. But the dependence of which I am talking is inward, inside. It is that inward dependence that creates fear, that clouds our mind, making it dull, heavy, insensitive.

We depend because in ourselves we are so empty, in ourselves there is nothing, not a seed that is flowering. But we do not know anything about these things, and it is the function of education, is it not, to show all the implications of human existence outwardly and inwardly. Our living is not just what appears outwardly; that is very superficial. A great many deeper things are hidden in us. To understand all that, to unravel it and go beyond, is the function of education, is it not?

January 20, 1954

किंतु जब हम बड़े हो जाते हैं यदि तब भी प्रसन्नता के लिए, आराम के लिए, मार्गदर्शन के लिए, सुरक्षा आदि के लिए हम किसी अन्य पर आश्रित रहते हैं, तब उस निर्भरता से भय का जन्म होता है। निर्भरता हमें बुद्धिहीन, असंवेदनशील तथा भयभीत बनाती है। हां, रेलवे या पोस्ट ऑफिस आदि पर हम तब भी निर्भर करते हैं। वह निर्भरता वास्तव में निर्भरता नहीं बल्कि कामकाज का एक हिस्सा है जिसमें हम सहभागी होते हैं। परंतु मैं उस निर्भरता के बारे में कह रहा हूँ जो आंतरिक होती है, भीतरी होती है। यह आंतरिक निर्भरता ही भय उत्पन्न करती है, यह हमारे मन को आच्छादित कर लेती है और उसे निष्प्राण, जड़ और असंवेदनशील बना देती है।

चूंकि हम अपने भीतर एकदम खोखले होते हैं इसलिए निर्भर रहते हैं, क्योंकि हममें स्वयं में तो कुछ होता नहीं, कहीं कोई बीज तक नहीं होता जो खिल सके। परंतु हमें इन सारी बातों का कुछ पता नहीं होता और क्या आपको नहीं लगता कि शिक्षा का काम ही है कि मानवीय अस्तित्व के सारे आंतरिक एवं बाह्य निहितार्थों का खुलासा करे? हमारा जीवन सिर्फ उतना ही नहीं है जैसा कि बाहर से प्रतीत होता है, वह तो बहुत सतही है। हममें और भी कई गहराईयां छिपी हैं। इन सबको समझने के लिए, इनका रहस्य बूझने के लिए और इनसे पार जा सकने के लिए शिक्षा का उपयोग है--है न?

२० जनवरी, १९५४